आदिम राग

आदिम राग

रवीन्द्रनाथ त्यागी

समीक्षायें
राधाकृष्ण प्रकाशन
दिल्ली–६

प्रकाशक — राधाकृष्ण प्रकाशन, २ अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली
प्रथम संस्करण — १९६८
कॉपी राइट — रवीन्द्रनाथ त्यागी
आवरण — गीता [illegible]
मुद्रक — श्रीकृष्ण प्रेस, इलाहाबाद
मूल्य — [illegible] रुपए

शमशेर वहादुर सिंह व विनोदचद्र पाडे को

लेखक की अन्य रचनायें

सूखे और हरे पत्ते [कविता स ग्रह]
कल्प वृक्ष [कविता स ग्रह]
खुली धूप मे नाव पर [हास्य और व्यग्य]
भित्ति-चित्र [हास्य और व्यग्य]
मल्लिनाथ की परपरा [हास्य और व्यग्य प्रेस मे]

आदिम राग

पेट सहसा हो गये लकडी
रास्ते धूल और जूते
चाँद बना सोने का प्रेत
नदी घर से निकली
आवारा औरत

फिर बादलो ने बरसना बन्द कर
पिघलना शुरू किया
आसमान का छाता
मेरे ऊपर होने लगा बन्द
फूल और चिडियो मे
कुछ भी नया न रहा

सुबह है हजामत का वक्त
दुपहर फाइल खुली छोटने का,
शाम की गुलेल पर
मुझे कोई फेंकता वापस,
रात को सोता घोडा
खडा खडा



इश्योरेंस की रसीदें, पास वुक
घर पर लाई फाइले
दौरे की तैयारी

खिडकी से वाहर झाँकना क्षण भर
अव तुम्हारी याद आने के लिए
जरूरी नही चाँद



सामने फ्लैट पर
जाडो की सुबह ने
अलसा कर जूडा बाँधा,
नीचे के तल्ले मे
मफलर से मुँह ढाँप
सुबह ने सिगरेट पी

चिक पडी गोश्त की दूकान पर
सुबह के टुकडे टुकडे किये गये,
मेरे बरामदे मे
सुबह ने अखबार फेका,
इसके बाद बबा खोल
माजने लगी बर्तन

किनारे की बस्तियो से
कमर पर गट्ठर लाद
सुबह चली नदी की ओर,
सिगनल के पास
मुँह मे कोयला भरे
लाल सीटी देती
सुबह पुल पर गुज़री



पँख कटी वारिश
चाँद का सगमर्मर
लान पर विछे कहकहे
केक पर चिपके इन्द्र धनुप
पोस्टरो मे जलता शाम का शव

वीयर के समुद्र मे
स्तनो के तट
नितवो की मछलियाँ
कमर के रेलिंग
और इन सवके ऊपर
निरन्तर हसता कोई उदास



झीलों हँसते गुलाब
चाँद फुसलाती लहरें
एक एक दो दो—लौटती चिड़िएँ
डूबते सूरज का देश

छुट्टी के दिन आधी रेट पर पिक्चर
दफ्तर, ओवर टाइम, सिगरेट
गली तक जाती ट्राम
और बीवी के बासी होंठों के बीच
किसी पराए देश के युद्ध पर
झूठी बहस,

पुराने दर्द की तरह
दिन कल फिर उठेगा



सडको के फर्श पर
सूखने लगी शाम की शराब,
एक भयभीत प्रकाश
कही कही चमकने लगा
अँधेरे के पशु की आँखे

आकाश के थान पर
ठहर गये थके तारो के घोडे,
सुन्दर और अय्याश
रात की पागल युवती
मुर्दा कुत्तो के बिस्तर पर
टूटा हुआ पियानो
अब फिर बजाएगी



बिसातियो की दूकाने, टपटप छाते,
छज्जे और तारो पर से कपडे उतारने को भागती
घरो की युवतियाँ
स्टेशन से लौटते भीगते घोडे

तारो पर से उड गया पक्षी—
वर्षा मगल के स्वर भर
खुशी के अकेले मे उतना नगा
उसको सिर्फ मैंने देखा



बारिश की बग्घी
गुजर गई सडको पर
हवाओ की लडकियो का
धूप मे पिकनिक

काला चश्मा पहिने चूहे
लबी लबी मोटरे हाँकने लगे
नपुसको ने बदूको के कारखाने का फाटक खोला
शालीन स्त्रियाँ परिवार नियोजन सीखने निकली
कपडे पहिने केकडे के लिए
नगा साड ठेले मे जुता
छावनी मे कवायद शुरू हुई

बादल छट गए
छुट्टी के दिनो की तरह
बिना बात भागते
कान्वेन्ट के बच्चे —



जेव कतरो जैसा चौकन्ना मौसम
घुघरू बाँध नाचती हवाएँ

समुद्र को तट पर छोड
वापस लौटती अधेड सडकें—
पहिले बनेगी भील
फिर बोट क्लब और हवाई अड्डा
फिर चमकदार रेस के घोडे



और फिर सहसा
लाशो ने उठ कर कपडे पहिनने शुरू किये
टाइयाँ लगाई
जूते बाँधे
सिगरेट सुलगाई
फिर कुछ मुर्दो ने बैंड बजाना शुरू किया
कुछ नाचने लगे

काफी देर नाचते रहे वे लोग
फिर मेज लगी
ठहाको के खजाने खुले
गर्म गर्म शराब ढली
खरीदी गई खुशी की आँच मे
वे सारी लाशे
मोम की तरह पिघल गई
मुर्दा लोग एक बार और मरे

ऊब की अलगनी पर
लटकती रही दो चीजें
एक इतवार
दूसरे एक नगी लडकी

●

वन की पगडडी की तरह
अनायास फिर मिल गई
वही पीली लडकी

पतझर की पत्तियो जैसी धूप
गिरने लगी हमारे ऊपर
वफ से लदी झील
काँपने लगी धीरे-धीरे
पुराने दिनो के कमल
खिलने लगे

चरागाहो को पार करते हम चले गए
वर्तमान को हाथ मे पकडे
वहाँ तक जहाँ से
लाल खपरैलो के पहाडी मकान चमकते है दूर,
और फिर वह सीमा आई

काश, मैं वहाँ जा सकता
जहाँ मैं जाना नही चाहता



फूल, नये पत्ते और धूप को बाँध
युवा मौसम जा चुका था वहाँ से
सिर्फ वे दिन शेष थे वहाँ
जब पेड की आखिरी पत्ती गिरती

सारी रूपवती ऋतुएँ उसकी देह मे छिपी
वन की आखिरी पत्ती
मेरे सामने गिरी



आकाश का साथ तट के लिए छोडता समुद्र
रासलीला मे नाचते कृष्ण जैसा चाँद
आदिवासी गीत, सुनसान खेतो के रेलवे क्रासिग
मिल की चिमनियाँ, फौज मे भरती होता वसन्त
मुझे अकेला क्यो छोडते हो, क्यो ?

उम्मीदो के हैट मे से
कब निकलेगा खुशियो का खरगोश ?
ड्रेसिग गाउन पहिने मेरा भाग्य
क्या बालकनी मे इसी तरह
शराब पीता रहेगा ?



होटल के छोकरे ताडी पीने निकले
हुगली पर स्टीमर ने भोपू दिया
आखिरी ट्राम अभी अभी गुज़री

सूदखोर पठान की तरह चाँद
लॉयड बैंक के पास मुझे खडा मिलेगा,
सामने के तल्ले की खूबसूरत लडकी
जूडा खोल सो चुकी होगी



आकाश को [illegible]
खूँखार दरिन्दों की तरह
इधर उधर घूमते बादल
और हवा
और हवा

रात के अँधेरे मे
कही कोई मशाल गुजरी
एक सिक्का किसी ने मेरी जेब से
निकाल लिया
मुझे पता लगा सहसा
दूर जो चमकता था
वह था नहीं बसन्त
सिर्फ एक खूबसूरत बन मे आग लगी थी

न रहे वे तट
न वे समुद्र
न वे पाल
पर एक चीज वही है वही—
मेरा पीछा करता हुआ
बीते दिनों का जहाज

वह नही डूबा

रँग विरगी वत्तियाँ, वैंड, कोका कोला
पटाखें, फुलझडियाँ और भागडा
वार्निश हुई कुर्सियो की कतारें
बैरो और खानसामो की एकाग्र व्यस्तता
प्लेट प्लेट परसती
सफेद हँसी

नये वस्त्रो मे फूल सी बँधी
कुछ लडकियो ने
नया रिकार्ड वजाना शुरू किया
इसके दूसरी तरफ का गाना
मुझे याद था

एक आइसक्रीम और लूँगा
फिर सिगरेट
फिर विदा
इससे पहिले कि शादी के लिए पकडी गई शाम
खाली प्लेट, फूटी वोतलें
और वर्दी निकले बैरो के ऊपर से गुजर कर
वहशी लडकी की तरह
मुझे काटने लगे



ओडीयन मे चित्र अभी छूटा
बरामदे मे पसरने लगी
अधनगी टाँग, अधनगी कमर
और अधनगे वक्षो की फस्ल

सगमर्मर के फर्श से
आग की लपटें
शीशे की दीवारो मे पिघलने लगी

मुझे तो बहुत अच्छी लगती
अधनगी हँसती युवतियाँ
कोई कोई देह ऐसी
यदि होती एक दम नगी
तो लगती ज्यादा मासूम

कुछ घटे बाद
ये सब रूपवती स्त्रियाँ
फिर बन जाएँगी मात्र शालीन पत्नी
अफसोस

मैं पार्क मे सिगरेट पीता हूँ
वहाँ बरामदे मे लोग जासूसी उपन्यास
और नगी युवतियो के रति-चित्र खरीदते है

लिपस्टिक, सेंट और खिजाब—
इनकी बिक्री जोरों पर
मैं सोचता हूँ, आज किसी के साथ
मौसम पर बात करता



बूढ़े गिद्ध गुम्बार दरख्त
इस विश्वास से कि कोई अब भी उन्हें चाहता है
फिर से मासूम, सुन्दर और जवान हो गए

इसके बाद फूल खिले
फिर घास हरी हुई

नीले नीले आकाश के तले
रेशमी हवाओं की रस्सियों पर
वसन्त का हिंडोला
पीली पीली दिशाओं में
घूमने लगा
घूमने लगा

जब वहाँ सब जवान हो गए
और सब सुन्दर
और जब वे एक दूसरे को चूमने लगे
— मैं वहाँ से चला आया



मात्र उतना क्षण नापेगा सारी उम्र,
प्रतीक्षा के वर्षों के कमल
उसके बाद फेंक दूंगा सड़कों पर
समय टूटेगा चीनी के बर्तन जैसा
क्या परवाह ?

नीली उँगलियों में जलती मोमबत्ती पकड़े
यह मै ही हूँ मैं ही
जहाँ सारे वसन्त समाप्त हुए
यह मैं तुम्ही से कहता हूँ — तुम्ही से —
पुरानी इच्छा के लोहे को और ज्यादा लाल कर
चाँदी का पुराना साँप
फिर आ गया

●

रात का समुद्र
निरागो के फेन,
दिशाओ की म्यान से लटकती
       मार्च के सौंदर्य की
       कटार

खुश खुश लडकियाँ
किसी की झाँकती हुई हँसी
मेरी उदासी की झील मे
लगा पत्थर

दीवारो के पिछवाडे
कूडा कर्कट,
फेंके हुए टूथब्रश, सिगेट की डिब्बियाँ
इस्तेमाल किए गए ट्यूरापेक के पैकेट
किसी भयभीत सुरग के साँप की केंचुल

ये ताकत की गोलियाँ कैसी होती है ?

दौरे का बिल
नही बना अभी
दो रिपोर्ट और देनी है
बीवी का जूडा आज भी भूल आया —
       चौरास्ते पर इतनी भीड !
       टकराया कोई दूध की गाडी से

कितने नाराज है लोग
साइकिल से गिरे बच्चे
और उसके बाप मे से
कोई भी नही मरा

पेट्रोल पप के पीछे
आकाश की झाडी पर
चन्द्रमा का फूल खिला
  साँसो की शय्या पर सोई
स्मृतियो की राजकुमारी को छेडता
बाँकुरा चांद

मेरे सीने पर से
यकायक कोई घुडसवार उतर गया

अरसा पहिले
मैं इस रास्ते से आया था
तब मेरी जवानी
धोबी के धुले कपडो की तरह ताजी थी — चुर्राक —
आज यह दफ्तरी कालर
कई दिन का पहिना
शायद अगली बार इस रास्ते से न आ सकू
कोई और आए
जो मेरा जिक्र ही करे

यह कमीज भी फट गई
इस बार रेडीमेड खरीदूंगा
चौराहे से चखूंगा चाई और
वहाँ से फौजी कसाई घर के ऊपर
चांद फिर चमकेगा

दूर कही टूटा तारा
शायद मेरा कोई और दोस्त
लडाई मे मरा



कितने नाराज हैं लोग
साइकिल से गिरे बच्चे
और उसके बाप मे से
कोई भी नही मरा

पेट्रोल पप के पीछे
आकाश की झाडी पर
चन्द्रमा का फूल खिला
  साँसो की शय्या पर सोई
स्मृतियो की राजकुमारी को छेडता
बाँकुरा चाँद

मेरे सीने पर से
यकायक कोई घुडसवार उतर गया

अरसा पहिले
मैं इस रास्ते से आया था
तब मेरी जवानी
धोबी के धुले कपडो की तरह ताजी थी — बुर्राक
आज यह दफ्तरी कालर
कई दिन का पहिना
शायद अगली बार इस रास्ते से न आ सकू
कोई और आए
जो मेरा जिक्र ही करे

यह कमीज भी फट गई
इस बार रेडीमेड खरीदूंगा
चौराहे से बचूगा बाईं ओर
वहां से फौजी कसाई घर के ऊपर
चांद फिर चमकेगा

दूर कही टूटा तारा
शायद मेरा कोई और दोस्त
लडाई मे मरा



नीले आकाश के नीचे
फूल उठा
छबीला कचनार

यही वह रास्ता
जहाँ से
घोडे पर चढा वसन्त
अभी अभी
गुजरा

राजा-रानियो के मुकुट
ऋतु का पीला हार

क्षितिज ने पहिन लिए
आग के कपडे
पिघलने लगा किसी के शरीर का सुवर्ण
सारे अग धीरे धीरे
होने लगे —
        या तो वक्ष
        या अधर



घास के तिनको मे जूडा बाँधे
किसानो की लडकियाँ
पके खेतो बीच
अभी अभी गईं

कितनी खुश थी वे
बिना बात हँसती,
सिवाय हँसने के इस तरह
बाकी सब कुछ
उन्हे अभी सीखना

बादाम का जिस्म
आग के खेत
दूध की हवा



धूप की घास टूग
चली गइ
सुबह की बकरियाँ

दुपहर की गिलहरी
दुबक गई
पश्चिम के पेड पर

बादलो के जाल से
सहसा छूटे
सूर्यास्त के कबूतर



—और इस तरह
नगर का विशाल सिक्का
एक दिन ढला

फिर वत्तियाँ चमकी
सडके दौडी
बादलो के कपडे सूखने के लिए
आकाश मे तार बँधे
नियोन वत्तियो के हार दीवारो ने पहिने
लान पर बिछने को
सात समुद्रो पार की घास
खुशी खुशी आई,
फूल से मकान खिले

वहाँ की हर चीज अपनी थी
समुद्र तट से लेकर
भय और ईश्वर तक

और जब नगर का तिलिस्म हो गया पूरा
क्षितिज का धनुष सहसा टूटा
नकली दाँतो के जबडे हाथ मे पकडे
भयावह बूढा जादूगर
सबसे ऊँचे तल्ले पर
फिर चमका

नगर का दिन होगया सिपाही
रात्रि वेश्या,
प्रात और सायकाल
मात्र थके शरीर
ऋतु एक समझदार शालीन दुःख

इलाके के गरीबो ने
जगल और पहाड
इसके बाद कही और काटने शुरु किए —



जेरुसलेम की तग पथरीली सडको पर
ईसा ने लकडी के क्रॉस को
वहाँ तक ढोया
जहाँ से क्रॉस के उसे ढोना था

छतो और छज्जो से
देखते रहे नर नारी
लकडी से जुडी
प्रभु की निश्छल गठीली मूर्ति
अँधेरे मे बढती मशाल की तरह

मगर देखा नही किसी ने वह सलीब
जिस पर उन्हे खुद चढना था,
अपने अत व आरभ की वे परपराएँ
जो उनके कधो पर सदा लदी थीं,
मृत्यु का वह भार—
जो मृत्यु से पूर्व
प्राणो ने सदा ढोया

प्यार का लबादा
समय की बर्फ में
हुआ भार
अपराधों की शिला पर
थक कर राजा ने
चाहा उसे उतार

टावर का आँगन
पत्थरों के परकोटे
भारी भीड़
सहमी झुकी रानी
जल्लाद की खिंची नंगी तलवार



आकाश का थैला फट गया सहसा
फूट पडी ठडी ठडी हवाएँ —
वादल विखेरती

गरीब वच्चो से नगे जगल,
पेडो पर से पत्ते
मुर्दा चूहो की तरह
पानी से टूट टूट
गिरने लगे

इस ठडी रात की सुरग से
कल मिलेगा नया दिन
न होगी वारिश
न हवा
मौसम होगा इतना सुहाना
कब्रिस्तान की चिडिया भी
नया गीत गाएगी

खैर वह तो कल होगा
आज तो मन की नदी मे कई बाँस डूवता दिन
कमरे मे वन्द
हम कुछ न कुछ जरूर कर गुजरेगे —
प्यार या हत्या

आज सूरज नहीं छिपा
आज तो समुद्रो पर से आए दैत्य ने
जगलो को पार कर दिन की हत्या की
उसकी लाश को
मुर्दा बच्चो, डूबे गांवो, टूटते कगारो
पटरी से उतरी रेलगाडियो, उखडे दरख्तो
और बिजली के खभो के साथ
टप टप भीगते आकाश के कपडे मे बाँधा
और उसके बाद
कीचड के चौडे चौडे डग रख
उस गठरी को वह
मेरी ड्योढी पर छोड गया

भय की मशाल के तले
क्षितिज पर बज रहा
प्रलय का ढोल



सामने का पेड टूट गया
आज बारिश मे,
इस पेड पर कभी कुछ नही फूटा
पर था यह इतना जवान और उदास
इस पर जो कुछ भी फूटता
वह फूल ही होता

इस पेड पर
एक चिडिया बैठती थी कभी कभी
वह अब कोई और जगह ढूढेगी

या शायद
मर गई हो
इस बारिश मे वह
पहिले ही



जलते चिरागो के साथ
गाँव मे पानी आया
आधी रात तक होगया भयकर,
रात की द्रौपदी का चीर
खीचने लगा दु शासन

पहिले बहे जानवर, घर बार, पेड
फिर बहे खेत और रास्ते
कितना दयावान् पानी का वह बहाव
जिसने डुबोने के पूर्व
माँ को बच्चे से अलग नही किया

दस दिन बाद उतरे जल
नावो से इकट्ठी हुई लाशे
मुर्दा घोडो और मुर्दा आदमियो मे
कोई फर्क नही था



मैने देखा है वह देश
जहाँ चाँद काला है
नदियो के हिरन किनारे की झाडियो मे मुर्दा पडे है
वसन्त किसी कैदी की तरह सिर्फ दिखाने के लिए
लाया जाता
और जहाँ रात और दिन
शव यात्रा से लौटते लोगो की तरह सिर्फ कही चलते
भर जा रहे है

इतने ज्यादा उदास
वे और उदास हो ही नही सकते



कलत्र में फर्श पर
कोई लुढ़का खाली बोतल के साथ
अंधेरी गली में होकर
एक और शरीफ आदमी
शरीर के शिकार को
कोठे की मचान पर चढ़ा

घर घर और गली गली
पुरानी दहलीजों और मेहराबों में
हांके के सिपाहियों ने मशाल जला दी
इसकी रोशनी में हम सबके चेहरे
कितने खूबसूरत लगते
सच, कितने खूबसूरत



पीलू पक गए
आओ वन की ओर चलें

'राजा था सोने का राजहंस
रानी मोतियों की लड़ी'
किसानों का गीत लगेगा आज
और दिनों से ज्यादा दर्द भरा ,
आज मैं दीखूंगा इतना सुन्दर
कि तुम मुझे छूना चाहोगी
हँसेंगे आज हम बिना बात
झूमते चंद्रमा की छाया में
बिना बात

पीलू पक गए
आओ वन की ओर चलें



समुद्रो मे डूबते जहाज की तरह
मजिलो के पाल पर पाल
भभक भभक जलते रहे
धधकती ईटो का सहारा पकडने की कोशिश मे
शालीन सुदरियो के यौवन
सीकचो पर चिपक गए कबाब की तरह
इमली के बीजो जैसी
असँख्य आँखें चौराहो पर बिखर गई
नुक्कडो और चौबच्चो मे
कुत्तो और रईसो की चर्बी
साथ साथ पिघली

धुआँ छोडती सडको की भीड मे
तँग पतलून वाले चद लडके
ढूँढ रहे थे रिस्ट वाच, कैमरे, ट्राजिस्टर
शराब और इतवार
जलते हुए करसी नोट, लडकियाँ और समुद्र तट
वे मुझ पर हँसते रहे

पार्क की बेंच पर
मुझे मिला वह आदमी
जिसने लगायी थी दाह

उसके दोनो मुर्दा बच्चे
चूहों की तरह उसके कधो से लटक रहे थे
अपनी प्रेयसि के फेफडे
उसकी जुरावो मे चिपके

अपने नक़ली दाँत हाथ मे पकडे
वह भी जल रहा था सिगार की तरह
मगर था वह खुश —
उसने शहर जला दिया

रात मैं एक जलते हुए शहर मे से होकर गुजरा



जब सट्टे मे उसने रुपया खोया तो रोया
जब फेल हुआ पिल्ले बैंक तो रोया
लडकी ने किया प्रेम विवाह तो रोया
जब भाई ने किया चद खेतो पर कब्जा
तो इसने बन्दूक निकाल ली
और जब कुत्ता खोगया नुमायश मे
तो छपा डाले उसने सारे अखबार

रात जब सन्नाटे की छाती पर
चुभोई किसी ने खबर की बर्छी
— बडा लडका मारा गया लडाई मे
स्यालकोट से आगे —
तो उसने कुछ नही किया
कुछ भी नही



उधर के कस्बे मे एक महिला रहती थी
सुन्दर और अमीर
उसके थे तीन पुत्र
तीनो फौज मे

एक दिन जब रात का खाना मेज पर लगा था
और जब लडके हँस हँस कर
अपनी विधवा माँ से गप्पे लगा रहे थे
किसी ने किवाड खटखटाया
हुक्म आया था राजा का
लडाई छिड चुकी थी
तीनो भाइयो को उसी रात जाना था

वे तीनो चले गए समुद्रो पर
और पहिले ही पखवाडे मे
तीनो मारे गए दुश्मन की तोपो से
उनके मरने की खबर
उनकी माँ को तब मिली जब वह—
बडे लडके के लिए लडकी सोच रही थी
मझले के लिए बना रही थी उम्दा शराब
और बुन रही थी दस्ताने
तीसरे के लिए

खबर सुन कर वह रोई नही
न उसने अपने काम बन्द किए
हमेशा की तरह उसने
लडको के कमरो की अगीठियाँ जलवाई
बिस्तरो की चादरे बदली
नौकरो को खाना लगाने का हुक्म दिया

न जाने कब तक
रोज इसी तरह बिस्तर ठीक होते रहे
मेज पर खाना लगता रहा
कमरो मे अगीठियाँ जलती रही
मगर कोई नही आया
और फिर एक रात
जिस दिन महिला सख्त बीमार थी
तीनो के तीनो लडके
एक साथ वापस आए
उसी तरह जैसे वह शिकार से लौटते थे

उन्होने लबादे उतारे
बर्फ झाडी
नौकरो की कमर थपथपाई
नौकरानी को चूमा
कि उसने मालकिन का साथ नही छोडा
फिर उन्होने खाना खाया
शराब पी

और अम्मा के पलग पर बैठ
जग की कहानियाँ सुनाई

सुबह होते ही
वे सबके सब वापस चले गए
बस इतना था
वे आए तो ये काले घोडो की बग्घी पर
पर जब वे गए
तो एक घोडा अम्मा के कफन की तरह भूरा था
और उसकी दुम कुछ कटी थी

[स्काटलड का एक बलेड]



अखबारो की झील मे
सुलह की शर्तों की मछलियाँ चमकी
थके जवानो से भरी रेलगाडियाँ
सीटी की सिगरेट दबाए
गई उधर सिगनलो के पार

कौशल्या की उदासी का सुवर्ण
जम कर गहना बन गया
अब तो लौटेंगे नही
वन से राम



आधी रात के वाद वहुत वर्फ गिरी
खपरैल, टीन, खभे और देवदार--
सब पहिले वगुले वने
फिर मर गए



उस परिचित लडकी ने
साडी भाड मडकें फैला दी
जगल और लान विछा दिए सहसा
उसके हँसने पर
पता नही कहाँ कहाँ खिडकियाँ खुली

उसका तन छूते ही
मुझे पता लगा सहसा
अपने शरीर के तिलिस्म का

पेडो से चिडियो की तरह
दिनो ने खुश खुश उडना शुरु किया
पीछे छूट गए कही
स्टेशन, नाव, पाप, चीड, और पतझड



कहकहो की तरह चटक पत्ते पेडो ने पहिने
पीले फूलो के खेत मे खडा हो गया
दिन का हरिण

छीट का रुमाल जेब मे रक्खे
किसी रईसजादे की तरह
वसन्त निकल पडा

रात कोई जगलो मे हँसा



टूटी हुई मुडेरे, गदी गलियाँ, तग ऑगन
इन सब के पार
पीले पिजरे मे बद मेरे बचपन का तोता

फिर वही नदी
जिसके पास हरे हरे वर्षा के कालीन पर
नीला आकाश मुकुट की तरह रक्खा
मेरे पहिनने के लिए

मै बराबर पीछे बढता गया घोडे पर
वहाँ तक जहाँ कुछ लोगो ने
मुझे गुडमुड कर गठरी बाँधी
और जूते के फीते, हड्डियाँ, क्राकरी और गुलमुहर
के साथ मुझे बाँध
मुझमे आग लगा दी



दूरियों का कफन ओढ
तुम्हारा चेहरा सो गया मुझमें
पहिले मैं जेल और दफ्तर था
फिर कब्रगाह् भी हुआ

पर्दो के बाद परदे उठे
उसने अपना जिस्म मुझे इस तरह् दिया था
जैसे किसी को कोई सिगरेट देता है

चिनार के पेड पर नई ऋतु का फूल
बाहर मोमबत्ती सा जलता चाँद

बदनवार से टगे पश्चात्ताप
झाड़फानूस से लटके भय
अगले दिन मैं फिर दिलचस्प हो गया



भीगी धरती की गध
खुली धूप का फूल ,
वर्षा के सयम से निकल
दिशाओ की देह
मुक्ति के कचन से
नख शिख निखरी

नदी ने पहिन ली
धूप की हँसुली

क्षितिज के पार जो और क्षितिज
नई ऋतु का रथ
इधर आने के लिए वहाँ सज रहा



झील खेत और गाँवो के ऊपर
जगली भैसे सा दौडता मानसून
बाँसो मे दुबकी
साँझ की अकेली चिडिया

सुबह सुबह मौसम का सफेद हस
पँख खोल उडेगा
शाल के वृक्ष नई पत्ती पहिनेगे
फूलो से लदेगे वन
मैदान हो जाएगे हरे और समतल

खुशनुमा मौसम मे अगर न बदला
तो मैं ज्यादा उदास लगूँगा



वचपन मे मेरी वर्ष गाँठ पर
माँ मुझे रुपया देती थी
पर वह इतनी गरीव थी
विना रुपया मिले भी कभी कभी
मैं एक साल और वढ जाता था

वारिश मे धुली
अपने मकान की मुडेर की तरह
मेरा दिल उन दिनो वहुत साफ था
मैं अक्सर सोचा करता था
वडे होने पर
अपनी वर्षगाँठ पर क्या क्या खरीदूगा
किन किन जगलो मे घूमूगा
किन किन पेडो, चिडियो और जानवरो से दोस्ती-
करुगा

और न जाने कौन से शहर की सडको पर
घोडा दौडा कर
ऐसे अमीर दिन पकडूँगा
जो रोज हँसा करेगे रोज

इसके वाद एक वर्षगाँठ पर
मुझे कही से फूल मिले
अगली वर्षगाँठ पर
वे मुझसे वापिस ले लिए गए

आखिरकार एक दिन
मैं भी हो गया समझदार और अमीर
अपने लिए जो कुछ चाहता, खरीद सकता
और तब मैंने अपने लिए
एक जंजीर खरीदी
मुलायम पर मजबूत
और खरीदते ही वह जंजीर
मेरे जिस्म पर कस कर बँधगई

अब न कोई वर्षगाँठ आएगी
न कोई फूल
यह जंजीर
इसके टूटने से पूर्व
मैं टूट चुकूँगा



जुते हुए खेत सा समुद्र
जाल फेंकती गठीली हवाएँ
लहरो के नीले घोडे दौडाते
फेन के सवार

दाँए हाथ चमकता
कछुए की खोल सा कस्बा
फटे पालो पर बैठे बूढे मल्लाह
मछलियो, शँखो और कहानियो की कीमत पर
वहाँ समुद्र बेचते —



कुण्डल पर कुण्डल पर कुण्डल
मेरे पीछे फुंकारता
समुद्र का बूढा सहस्त्रफन

जहरीले नील तरल मे
खुशी खुशी भिगोया मैंने
उदासी का कवच
तट के सबसे अकेले वक्ष पर
अपने प्यार को मैंने
कील से ठोक कर लटका दिया



गुलामो के रक्त की कीचड, सुदरियाँ और मशाल
समयहीन यात्राएँ
अक्षाश और देशान्तर

समय के भँवर मे
वासना और महत्वाकाक्षाओ की पेटियो से लदे
शताब्दियो के पाल उडाते बेडे
डूब चुके कभी के ,

बादलो की डोर के सहारे
फाँसी लगी हसीन औरत की तरह
चाँद लटका है



हवाओ मे खोई नावे
लाश पहिचानते बच्चे
जाल मे उलझी आँखे और पेट

लडाई को जाते राजपूत की तरह
ढाल और तलवार बाँधे
समुद्र उस दिन कितना बाँका था



कोठी, मोटर, बैरे, और लान
रूपवती पत्नी, हँसमुख बच्चे
शेयर्स, सिक्यूरिटीज, जायदाद
फ्रिज, फोन, चंचल सेक्रेटरी
ऊटी और नैनीताल

उसकी ज़िंदगी की छोटी डोंगी पर
सुख के इत्ते भारी पाल !



जीन पड़े घोड़े, फूल सूंघते शहंशाह
पट्टा लिखते कारिंदे, कुर्क होते किसान
गाय मांगते ब्राह्मण
ठुमुक ठुमुक नाचती खूबसूरत लड़की
मृत्यु के हल ने सबको जोत दिया

कहाँ जा रहे हैं हम सब
क्लर्क, भिखमंगे, अफसर
फूहड़ कुली, शातिर सट्टे बाज
पाँच पाँच आने की बोली लगाते हाकर
जूड़ा बाँधे गृहिणी, गुब्बारे जैसे बच्चे
जवान आया, बॉब कट कॉल गर्ल
बकरी घसीटता खटिक
नकाब डालता जेल का वार्डर
तमचा बाँधे खाकी सिपाही
कहाँ जा रहे हैं हम सब ?
न समय न दिशा

जासूसी उपन्यास, रतिचित्र, लक्स से मुलायम त्वचा,
—इस शेषनाग पर लेटा खुशी का विष्णु
कब तक सोएगा? कब तक ?
क्या हम भी वही जगह ढूंढ रहे हैं
जहाँ कोई हमारी शक्ल बदलेगा

हम घास, पेड या अनाज बनेंगे
हमारी अगली पीढी हमे खाएगी
वसन्त सी चटखेगी चिता ?

सारसो की गर्दन सी उठती सुबह
मुर्गाबियो सी चचल दोपहर
पैरो मे लोटते सूर्यास्त
थकी गाय सी लौटती साँझ
हवा मे बुना खुशियो का रेशम
और इन सबको रौदता
पाप का सुलतान
कभी का गुजर गया यहाँ से
घोडे की अनन्त टाप छोडता

समय का पहाड जितना ज्यादा खोदा गया
इतिहास का लोहा उतना ज्यादा काला
समस्याओ का हल फिर वही सलीब

कल इतवार
छुट्टी के दिन का तौलिया
बाकी दिनो के दुख का मुँह पोछ
उसे और चमका देगा
हजार इच्छाओ के बावजूद
हम अपनी खालो मे से
कूद नही सकेंगे
छत से लटकती रहेगी
सुख की वही पुरानी तलवार

वर्षा मे धुले पहाड
यक्ष से खडे चीड के पेड
मथर गति मदाक्राता मेघ
इतने दुख का गीत
कवि तुमने क्यो गाया

विदा के प्रणाम सा छोटा जीवन
दुख के लबेपन से और हुआ छोटा
भूख प्यास बीमारी
क्रोध, घृणा, ईर्ष्या और भय
लालच व व्यभिचार
जितने व्यक्तिगत या सामाजिक पाप
इन सबसे घिरा
सौन्दर्य व उल्लास का द्वीप
उस द्वीप का मार्ग हड्डियो की यही सिवार

सूखी नदियो के शव लाँघ
मै वही जाऊगा — वही —



उस शाम मैं कहाँ गया — पता नही
इतना याद कि जादूगर के चोगे की तरह काले
समुद्र के पास
मेरी गाडी रुकी

एक तारे की साँझ के अधेरे मे
मैंने देखा डूबता हुआ वह जहाज
जिस पर किस्मत की गाठे लदी थी

और मैं वहाँ बैठा रहा
टूटी तलवार के पास —
पराजित सिपाही की तरह
किसी ने जिसे बन्दी भी नही किया



समुद्र, नारियल के वृक्ष और वर्षा
बादलो के जहाज लग गए तट पर
उतरने लगे बूद, फेन, लहरो के यात्री

वर्षा का खुला पाल
पहिले छिपा समुद्र
फिर नारियल के वृक्ष
फिर छिपी वर्षा से वर्षा



रेत के घरौंदे
सीपियों के ढेर
टखनों तक पानी में
खिलखिलाते बच्चे

पीली धूप के पाल
नीले समुद्र का जहाज
नारियल के तट पर
सुबह से खडा

पहिले आती एक लहर
फिर और
फिर और
फिर और
दूर वहाँ हँसा कोई —
शायद उसने भी
लहरों के भ्रम में
बालू पकडी

छपाक् उड गया
ऊपर मेरे
सफेद तोता

●

समुद्र का बूढा जादूगर
गर्दन दबोच मेरे कन्धो पर बैठ गया
हालाकि मै सिन्दबाद नहीं था

लहरे धुनती हवा
तट पर डगमगाते नारियल के हाथी
बेच पर टाग सुखाती कीमती मेम सॉब
— फेन सी पिघल गई

मेरे और समुद्र के सिवा
वहाँ कोई नही रहा



युद्ध फिर छिड गया
यात्रियो से लकदक जहाज अब डूबेगे आ हा हा
चिनार का पीला दिन क्रास पर टागा जाएगा
लौह फेन उगलेगा समुद्र
डिग डिग डिगा डिगा
मौसम भिगा भिगा

सडे कामिक्स से काफी के कप तक का सुख
मेजपोश पर बिखेरोगे ? आखिर क्यू ?
कमर मे हाथ डाल
आओ, हम दोनो आखिरी बार हँस ले



संकेत





ये कविताएँ एक पस्टोरल जिज्ञासा से अनुरंजित हैं। रवीन्द्रनाथ त्यागी में एक प्रच्छन्न सादगी है जो उनके समूचे कृतित्व में महसूस होती है।

● डॉ० श्याम परमार

परंपरागत प्रकृतिचित्रण से हटकर इन कविताओं में प्रकृति को मानव जीवन के संदर्भ में चित्रित किया गया और लोकतत्त्व को आधुनिक व्यंजनाओं का सफल माध्यम बनाया गया

● सुरेन्द्रपाल

अभिव्यंजना में मनोरम प्रवाह है, एक ओर चंचल गति, दूसरी ओर उदासी और टीस

● जगदीशचन्द्र माथुर

आजकल की कविता चित्रकला को अपने भीतर कितना घुला रही है यह इन कविताओं में देखा जा सकता है

● उदयभान मिश्र

इन कविताओं में नयी जमीन तोड़ी गई है और नये ढंग से तोड़ी गई है, जैसा कि ह्विटमन ने 'लीव्स ऑव ग्रास' में किया था

● रघुपतिसहाय फिराक